April 2016 IJRSS Volume 6, Issue 4 ISSN: 2249-2496

# पंडित मोतीलाल नेहरू : होमरूल आंदोलन

रणजीत कुमार
शोधार्थी
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में न जाने कितने योद्धा गुमनाम बलिदानी तरह अंग्रेजी हुकूमत की बर्बरता और दमन की भेंट चढ़ गए। उनमें हजारो–लाखों ने आजादी का सवेरा देखे बिना ही इस दुनिया से विदा ले ली। इतिहास ने भी उनके साथ नाइंसाफी की। कहीं उनका जिक्र तक नहीं। छोटी–छोटी रियासतों में बंटे भारत को गुलाम बनाए रखने में अंग्रेजों ने भारतीयों की सादगी और शांतिप्रियता का नाजायज फायदा उठाया, तो दूसरी तरफ सामाजिक एवं मानसिक कमजोरियों को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। जिस वक्त देश अंग्रेजों के आर्थिक शोषण, राजनीतिक पराधीनता एवं सैन्य दमन की यंत्रणा झेल रहा था, उसी समय सामाजिक मोर्चे पर भी वह अपने ही अतंर्द्वदों और कमजोरियों की वजह से टूट रहा था। इसीलिए स्वतंत्रता संग्राम के महानायकों ने अंग्रेजों के अलावा खुद की भी सामाजिक कमजोरियों के विरूद्ध जारी रखा। महात्मा गांधी, पं. मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, राजा राममोहन राय, सरदार भगत सिंह, असफाक उल्ला खां, राजगुरू, पं. जवाहर लाल नेहरू, डॉ. भीमराव अंबेडकर ने राजनीतिक संघर्ष के साथ–साथ सामाजिक एकता का भी महान संदेश दिया। लेकिन कई बलिदानी मनीषियों के तमाम महत्वपूर्ण पक्षों से वर्तमान पीढ़ी अनभिज्ञ है। पं. मोतीलाल नेहरू भी उनमे से एक हैं जिनके वैचारिक एवं संवैधानिक योगदान पर संभवतः कम चर्चा हुई है।

राष्ट्रवाद के पीछे एक महती भावना काम रही है। सभ्यता, संस्कृति, धर्म, भाषा, ऐतिहासिक स्मृति के सहारे जन–समूह के अंदर एकीभाव का उदय होता है। जब इस एकता को राजनीतिक आत्मा–निर्णय के अधिकार का प्रदाता और वाहक हम मानते है। तो राष्ट्रवाद का जन्म होता है। यूरोप में सांस्कृतिक पुनरूत्थान के साथ–साथ मानसिक स्वतंत्रता का भी जन्म हुआ। 15वीं शताब्दी से ही यूरोप में एक नये समाज का निर्माण होने लगा। इस नये समाज के मूलभूत दो कारण थे – (क) मानसिक स्वतंत्रता के फलस्वरूप संवर्धित बौद्धिक शक्ति का परम्परा से आये हुए धन और धर्म की संगठित शक्ति के विरोध में खड़ा होना। (ख) पूँजीवाद के विकास के साथ–साथ एक नये आर्थिक वर्ग का जन्म जो व्यापार और पूंजी के सहारे अपनी शक्ति को वेग से बढ़ा रहा था। राष्ट्रवाद का पहला रूप इंगलैंड, फ्रांस, स्पेन तथा हालैण्ड के अन्दर व्याप्त हुआ। 18वीं शताब्दी के अन्त तक राष्ट्रीय भावना का प्रदर्शन देश–विदेश के राजवंश के प्रति अनुरक्ति और भक्ति में प्रकट होता था। फ्रांस की राज्य–क्रांति के बाद से धीरे–धीरे राष्ट्रवाद का जनतंत्रात्मक रूप व्यक्त होने लगा।[1]

होमरूल : 1917 का वर्ष इस जादुई शब्द से शुरू और अंत हुआ। यह शब्द लाखों भारतीय घरों में गूँजता रहा, जो राष्ट्रवादी भारत के लिए देशभक्ति तथा आशा का और गोरे शासकों के लिए राजद्रोह एवं अराजकता का प्रतीक था।

होमरूल की मुख्य पुरोहित लंदन में जन्मी 69 वर्षीय श्रीमती ऐनी बेसेण्ट थी, जिन्होंने भारतवर्ष को अपना घर मान लिया था। उन्होंने जनवरी 1914 में मद्रास से 'कॉमनवील' नामक एक

साप्ताहिक पत्र एवं 'न्यू इण्डिया' निकाला। इस दैनिक का पहला अंक बस्तील के पतन की बरसी के दिन 14 जुलाई को प्रकाशित हुआ।[2] उन्होने 'रेडमांड होलरूल लीग' की तरह के आंदोलन की भारत के लिए कल्पना की। उन्होंने घोषित किया, मैं एक भारतीय घण्टी हूँ जो सभी सोने वालों को जगा रही है, जिससे वे जागें और अपने देश के लिए कार्य करें। उन्होने होमरूल लीग संबंधी अपने विचार इण्डियन नेशनल कांग्रेस में डालने चाहे तथा उस संस्था में एकता स्थापित करने के लिए गरम दल वालों को वापस लेना चाहा जो, 'सूरतबिलगाव' के बाद निकाल दिए गए थे। फिरोजशाह मेहता के नेतृत्व में कांग्रेस पर कब्जा जमाए हुए नरम दल वाले गरम दल वालों को लगाने में उतना ही हिचक रहे थे जितना वे सरकार को असमंजस में डालने से हिचकते थे। उन्हें भय था कि कोई भी नया संगठन इण्डियन नेशनल कांग्रेस को कमजोर और विभाजित कर देगा। वे इस गतिशील बुढ़िया के प्रति भी संदेहशील थे जो न तो स्वयं चैन लेती थी और न दूसरों को लेने देती थी।[3]

मोतीलाल नेहरू की उभरती हुई राजनीतिक विचारधारा होमरूल आंदोलन में प्रकट हुई। इस आंदोलन में उनका सम्मिलित होना उनके राजनीतिक जीवन के विकास में एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है। राजनीति में उनके राजनीतिक जीवन के विकास में एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है। राजनीति में उनकी रूचि अधिक बढ़ती गई और उनके वकालत के पेशे से अधिक प्राथमिकता प्राप्त करती गयी । होलरूल आंदोलन जो प्रथम महायुद्ध के समय आरंभ हुआ एक ऐसी रोचक घटना हो गयी जिसने मोतीलाल को आकर्षित किया। इस आंदोलन के प्रमुख नेता श्रीमती ऐनी बेसेण्ट और लोकमान्य तिलक थे। इस आंदोलन का उददेश्य भारत को अंग्रेजी शासन में रहते हुए भी आंतरिक मामलों का शासन भारतीयों द्वारा हों इस माँग को होमरूल से संबंधित किया गया। यह आंदोलन 1916 में एक राजनीति की शक्ति के रूप में उभरा। इस आंदोलन में नवयुवक और विद्यार्थी भी सम्मिलित हुए। समकालीन रिर्पोटों में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इस आंदोलन को शिक्षित भारतीयों का समर्थन प्राप्त था। यू0 पी0 में भी इस आंदोलन ने शक्ति पकड़ी और जनमत इसके पक्ष में हो गया।

श्रीमती ऐनी बेसेण्ट के अनेक समर्थक और प्रशंसक यू0 पी0 में थे और वह श्रीमती ऐनी बेसेण्ट द्वारा चलाए गए होमरूल आंदोलन की उपयोगिता को अच्छी तरह समझते थे। होमरूल आंदोलन के समय यू0 पी0 की उपयोगिता को अच्छी तरह समझते थे। होमरूल आंदोलन के समय यु0 पी0 में राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र इलाहाबाद था। 7 दिसम्बर 1915 को इलाहाबाद में बहादुर गंज में स्थित हार्डिंग हॉल में श्रीमती ऐनी बेसेण्ट का एक भाषण हुआ। इनके भाषण को सुनने के लिए लगभग एक धण्टा पहले ही बहुत से छात्र इकट्ठे हो गए। जब उनका भाषण हुआ तो हॉल खचाखच भरा हुआ था। देश के अन्य स्थानों के समान इलाहाबाद में भी होमरूल लीग की शाखायें स्थापित हुई और इसमें सी0 वाई0 चिन्तामणि, तेज बहादुर सप्रू तथा हृदयनाथ कुंजरू जैसे प्रसिद्ध नेता सम्मिलित हुए। मोतीलाल नेहरू ने भी होमरूल आंदोलन की सदस्यता ग्रहण की ओर उन्होंने अपने भाषणों एवं अन्य गतिविधियों द्वारा आंदोलन का समर्थन किया। जब श्रीमती ऐनी बेसेण्ट को नजर बंद कर लिया गया और उनपर सरकार के विरुद्ध कार्यवाही करने का मुकदमा चलाया गया तो सरकार की इस दमन नीति से क्रोधित होकर अनेक का मुकदमा चलाया गया तो सरकार की इस दमन नीति से क्रोधित होकर अनेक नेताओं ने होमरूल आंदोलन का सक्रिय रूप से समर्थन किया। मोतीलाल नेहरू ने इस आंदोलन के संचालन में कोई कमी नहीं रखी। श्रीमती ऐनी बेसेण्ट की नजर बंदी को लेकर इलाहाबाद में भी राजनीतिक उत्तेजना बढ़ती गयी। ऐसी समय पर मोतीलाल नेहरू राजनीति की प्रमुख पंक्ति में आ गए और उन्होंने अन्य नेताओं के सहयोग से इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। 22 जून को उन्होंने एक

सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा कि सरकार ने राष्ट्रीय हितों को ठेस पहुँचाने के लिए एक युद्ध छेड़ दिया है परन्तु हमको अपना राष्ट्र ध्वज ऊँचा रखना है और राष्ट्रीय सम्मान के लिए प्रयत्न करना है। हमारा एक मात्र उद्देश्य होमरूल प्राप्त करना है। नौकरशाही होमरूल के लिए एक मौत का गड्ढ़ा खोदना है। परन्तु हमको इस सब बातों का विरोध करते हुए आगे बढ़ना है। मोतीलाल नेहरू ने इस कार्य की इतनी प्रशंसा हुई कि मोतीलाल नेहरू इलाहाबाद लीग के अध्यक्ष चुन लिए गए और उनके पुत्र जवाहर लाल नेहरू उसके सेक्रेटरी चुने गए। इस प्रकार होमरूल आंदोलन मोतीलाल नेहरू के राजनीतिक जीवन के विकास में एक नई कड़ी है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि वे उदारवादी विचारधारा से आगे बढ़कर उग्रवादी विचारधारा में भी प्रवेश करने लगे। भारत में होमरूल आंदोलन और श्रीमती ऐनी बेसेण्ट की नजरबंदी से राजनीतिक गतिविधियों में इनता उभार आया कि वो बहुत से प्रभाशाली भारतीय जो अब तक होमरूल आंदोलन से अलग थे खुले रूप से इस आंदोलन के समर्थन बन गए। इनमें निम्नलिखित व्यक्तियों के नाम उल्लेखनीय है। तेज बहादुर सप्रू, मोतीलाल नेहरू, सी0वाई चिन्तामणि, श्रीमती सरोजनी नायडू, रविन्द्र नाथ टैगोर, मोहम्मद अली जिन्ना, हसन इमाम और डॉ0 एम0आर0 जयकर। इन्होंने लीग की सदस्य ही स्वीकार नहीं की बल्कि इस संस्था में महत्वपूर्ण पदवी भी ग्रहण की । 22 जून 1917 को इलाहाबाद के नागरिकों ने एक सभा की जिसकी अध्यक्षता के लिए मोतीलाल नेहरू को आमंत्रित किया गया। इस सभा की सूचना हेतु जिन 44 व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किए थे उनमें नगर के प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित थे। सभा में बोलते हुए मोतीलाल नेहरू ने कहा कि ''हमारा देश संकट में है। सरकार ने राष्ट्रीय उद्देश्यों के विरूद्ध खुले रूप से युद्ध छेड़ दिया है क्या हम सरकार की नाराजगी के सामने सपर्पण करने जा रहे हैं? हमको होमरूल लीग के पताका को ऊँचा रखना है क्योंकि 33 करोड़ व्यक्तियों का मुख्य नारा होमरूल है। नौकरशाली होमरूल के जन्म से पहले ही उसकी मृत्यु करना चाहती है। इसको ऐसा नहीं होने देना है। हम आगे ही बढ़ते रहेंगे।'' मोतीलाल नेहरू के राजनीतिक विचारों में बढ़ती हुई प्रवृति का एक प्रमाण यह भी है कि उन्होंने उस कमेटी की सदस्यता त्याग दी जिस कमेटी का निर्माण शिक्षित युवा भारतीयों का कमीशन ने भर्ती करने के लिए किया और जिसके लिए जवाहर लाल नेहरू स्वयं प्रत्याशी थे। ये बात उल्लेखनीय है कि पिता, पुत्र दोनों ही राजनीतिक गतिविधियों में इतने लिप्त हो गए कि उन्होंने इस समिति को ही भंग करा दिया।[4]

मेतीलाल नेहरू और उनके पुत्र जवाहरलाल नेहरू दोनों ही राजनीतिक जीवन में इतने सक्रिय हो गए कि उनकी गतिविधियों ने होमरूल लीग में एक नई शक्ति प्रदान की । 3 अगस्त 1917 में प्रांतीय कांग्रेस की एक विशेष सभा लखनऊ में हुई इसमें 548 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ये प्रतिनिधि प्रांत के विभिन्न भागों से आए थे, और इसकी अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू ने की थी। इस सभा में विभिन्न वर्ग, के लोग सम्मिलित थे। जैसे उदारवादी, उग्रवादी, वकील, डॉक्टर, व्यापारी वर्ग, जमींदारी वर्ग और ऐसे व्यक्ति भी सम्मिलित थे जो राजनीति में कम भाग लेते थे। मोतीलाल नेहरू द्वारा सभा की अध्यक्षता पर टिप्पणी करते हुए इस समय के एक प्रमुख समाचार पत्र के लीडर ने लिखा था कि मोतीलाल नेहरू का एक अनुभव रहित राजनीतिक या उग्रवादी युवक या श्रीमती ऐनी बेसेण्ट का अंधविश्वासी समर्थक कहना उचित नहीं होगा। वो 56 वर्ष के अनुभवी और विचारशील व्यक्ति हैं और उत्तरदायित्व की भावना से कार्य करते हैं। उनके देशवासी उनकी प्रशंसा करते हैं और उनपर विश्वास करते है और वो नौकरशाही के भी इतने विश्वासपात्र हैं कि जितने देशवासियों के भी, इसलिए वो जिन संस्थाओं से जुड़े हुए हों उनका वो साहस एवं बुद्धिमता से संचालन करते है। मोतीलाल नेहरू के वक्तव्यों से उनके राजनीतिक विचारों का ज्ञान होता है यद्यपि वो नौकरशाही के आलोचक बनते जा रहे थे, वही उग्रवादिता की ओर बढ़ते जा रहे थे किन्तु उनकी विचारधारा में एक वैधानिक आंदोलन की

छाप थी और उन्होंने राष्ट्रीय संघर्ष के लिए संवैधानिक पद्धति को पनाया। लखनऊ में 10 अगस्त 1917 को प्रदेश कांग्रेस के विशेष सम्मेलन में अध्यक्ष पद से दिए गए भाषण में उन्होंने कहा कि ''हम राजनीतिक सुधारों की माँग न्यायसगत और सराहनीय मानी जाती रही है। सरकार को परेशानी में डालने या लड़ाई के काम में अड़ंगा डालने वाली कोई बात नहीं की गयी। इन निर्विवाद तथ्यों के आधार पर कौन यह कहने का साहस कर सकता है हक हम इंग्लैण्ड की परेशानियों का नाजायज फायदा उठा रहे है।'' मोतीलाल नेहरू होमरूल आंदोलन के समय भी उदारवादी के ही समर्थक थे। उनकी धारणा थी कि ''भारत में नौकरशाही भारतीयों की भावनाओं को समझने में असमर्थ है। वो यह नहीं समझ पाते कि हम भारत और इंग्लैण्ड के संबंधो को स्थायी रूप से बनाए रखना चाहते है।''

कांग्रेस लीग समझौता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा ''अब मेरे लिए यह बताना बाकी रह गया है कि इस समय हमारा सही कर्तव्य क्या है। हम न्याय संगत व्यक्ति होने का दावा करते है और इसी दृष्टि से हमने अपने महान राष्ट्रीय संगठनों के जरिए सुधारों की एक योजना पेश की है। हम समझते हैं कि उचित समय क अंदर पूर्ण उत्तरदायी स्वशासन प्रदान करने की दिशा में पहली किश्त के रूप में इन शासन सुधारों के लिए हम हकदार है। हमारी समझ में हमने जो माँग रखी है, वह वास्तविक सत्ता की दिशा में हमारी न्यूनतम माँग हैं, जो स्वीकार कर ली जानी चाहिए। यह कहना भी गलत है कि हम क्रांतिकारी है और हम तुरन्त पूर्ण उत्तरदायी शासन से कम कुछ नहीं लेंगे। मुस्लिम लीग या होमरूल लीग के किसी भी जिम्मेदार सदस्य का ऐसा विचार कभी नहीं रहा है। बम्बई में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के संयुक्त सम्मेलन में प्रयुक्त किए गए एक प्रतिवेदन में हमारी स्थिति स्पष्ट कर दी गयी है।[5]

मोतीलाल नेहरू भारतीय राजनीतिक मंच पर इतने लोकप्रिय हो गए कि उनका स्थान राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के समान होने लगा। 1917 में जब उस समय के वायसराय चैम्सफोर्ड और भारत मंत्री माण्टेग्यू से कांग्रेस के प्रतिनिधि मिलने गए तो उनमें मोतीलाल नेहरू भी थे।

## संदर्भ सूची :–


1. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत : 1885 – 1947, मैकमिलन, पद्रास, 1983
2. स्वाधीनता का सिंहनाद : मोतीलाल नेहरू के भाषण, 1963, पृ0– 47
3. राधाकृष्ण, एस0, द वाइस ऑफ फ्रीडम सेलेक्टेड स्वीचीस ऑफ मोतीलाल नहरू, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, 1961
4. बेसेण्ट, एनी, हाउ इण्डिया व रॉट फॉर फ्रीडम, द स्टोरी ऑफ द नेशनल कांग्रेस टॉल्ड फ्रॉम ऑफिशियल रिकार्डस, 1915
5. स्वाधीनता का सिंहनाद : मोतीलाल नेहरू के भाषण, 1963, पृ0– 56